L·N·M· College OF Higher Education

B·ED· - 1st Year (2019-21) / Date-02·06·2020.

Saathi
<By Rakesh Sir>

Date __ / __ / __

<Rev Exercise> BCC-4 (Language Across the Curriculum)

UNIT-2 / Chapter No.→1 → HOME LAGUAGE AND SCHOOL LANGUAGE

LANGUAGE DIVERSITY AND MULTILINGUALISM

(भाषा विविधता एवं बहुभाषिता) :→ गृहभाषा एवं स्कूल-भाषा

(Long Answer Type Questions) <दीर्घउत्तरीय प्रश्न>

प्रश्न सं० →<1> गृह-भाषा एवं स्कूल-भाषा पर एक संक्षिप्त निबन्ध लिखिए। (Write an essay on Home-Language and School-Lang)

उत्तर→ किसी भी प्रकार की भाषा राष्ट्र के विचारों तथा भावनाओं को व्यक्त करने का श्रेष्ठ साधन माना गया है। भाषा के द्वारा व्यक्ति अपना भाव, विचार, एवं अपनी अभिव्यक्ति दूसरों पर व्यक्त करता है। भाषा एक ऐसा माध्यम है, जो समाज या राष्ट्र के रंगमंच पर होने वाले विविध क्रिया-कलापों, घात-प्रतिघातों तथा घटनाक्रमों से उद्वेलित मानव मन के उद्‌गारों को वाणी प्रदान करती है। चाहे कोई भी विषय जैसे इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र आदि क्यों न हो, भाषा के बिना उसका प्रकटीकरण सम्भव नहीं है। इसीलिए हमारे शिक्षा-क्रम में भाषा का बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसी कारण सभी देशों में स्नातक स्तर तक भाषा की शिक्षा अनिवार्य है। भाषा अभिव्यक्ति का प्रमुख साधन है। भाषा अपने देश एवं संस्कृति से परिचय कराती है। संचित ज्ञान-राशि का रसास्वादन हम भाषा के माध्यम से ही कर सकते हैं। जीवन की यात्रा में भाषा ही हमारा सहारा बनती है।

गृह-भाषा या घर की भाषा (Home-Language) → भाषा का भावों से गहरा संबंध है। बालक माता के दूध के साथ-साथ घर की भाषा भी सीखता है। भाषा का प्रभाव बालक के घर में उसके

P.T.O.

Scanned with CamScanner

माता-पिता तथा गुरुजन एवं भाई-बन्धु जैसा करेंगे वही भाषा बालक भी सीखेगा। यह संबंध केवल अनुकरणात्मक ही न होकर भावात्मक भी होता है। बालक अपने माता-पिता से स्नेह करता है और उसके माता-पिता भी उसे बड़ा प्यार करते हैं। इसी कारण बालक सर्वप्रथम अपने घर की भाषा सीखता है। घर की भाषा के साथ उसका संबंध धीरे-धीरे इतना गहरा हो जाता है कि वह जो कुछ भी सोचता है वह घरेलू भाषा में ही सोचता है। दैनिक जीवन में अन्य भाषाओं का प्रयोग करने की क्षमता का विकास हो जाने पर भी वह जितनी सुगमता से घरेलू भाषा का प्रयोग करता है, उतना किसी अन्य भाषा प्रयोग नहीं कर पाता है। प्रौढ़ अवस्था में भी घर की भाषा का जो संबंध व्यक्ति के जीवन में होता है वह किसी अन्य भाषा का नहीं होता है। व्यक्ति किसी भी समय सोते-जागते अपने विचारों की अभिव्यक्ति जितनी सहजता से घर की भाषा में कर लेता है उतना अधिकार उसका किसी अन्य भाषा में कभी नहीं हो पाता है। राष्ट्र की भावना का विकास इसी आधार पर होता है क्योंकि घरेलू भाषा हमें अभिव्यक्ति की सहजता प्रदान करती है।

घर की भाषा का महत्त्व (Importance Of Home Language) →

घर की भाषा वह होती है जो बालक माँ से सीखता है अतः इसे मातृभाषा के नाम से भी जाना जाता है। आत्म निर्देशन हेतु तथा भावों की अभिव्यक्ति के लिए तथा भावों की अभिव्यक्ति के लिए तथा दूसरों के विचारों को ग्रहण करने के लिए मानव को किसी-न-किसी भाषा का प्रयोग करना पड़ता है, परन्तु अपने अन्तर्द्वन्द्वों, उद्वेगों तथा मनोभावों का अभिव्यंजन जितनी सुंदरता, सरलता तथा स्पष्टता से वह अपनी घरेलू भाषा में कर सकता है उतना किसी अन्य भाषा में नहीं कर सकता है। अपने समाज के शिष्टजन जिस भाषा में विचार-विनिमय, कामकाज, लिखा-पढ़ी करते हों वही घरेलू भाषा या मातृभाषा है। जिस भाषा का प्रयोग बालक माता से सीखता है और जिसके माध्यम से वह अपने परिवार एवं समुदाय में अपने विचारों की अभिव्यक्ति करता है, सही अर्थ में उस बालक की वही मातृभाषा है किन्तु उत्तर प्रदेश में अपनी भावाभिव्यक्ति प्रायः अवध →

Scanned with CamScanner

ब्रज, भोजपुरी बोलियों के माध्यम से करते हैं फिर भी उत्तर प्रदेश के शि
शिष्ट समाज के विचार-विनिमय का माध्यम खड़ी बोली हिन्दी है। उ
प्रदेश की मातृभाषा हिन्दी ही है, न कि कोई बोली विशेष और छा
को इसी हिन्दी का ज्ञान कराना है। भाषा की गतिशीलता के कारण
प्रत्येक भाषा की अन्य उपभाषाएँ और बोलियाँ सम्मिलित होती हैं।
वस्तुतः माता जिस बोली अथवा उपभाषा को बोलती है वही बालक
की घरेलू अथवा मातृभाषा होती है। हम घर में अपनी आदेशिक बोल
बोलते हैं परन्तु बाहरी व्यवहार में नागरी या हिन्दी ही बोलते या लिखते है

घरेलू भाषा के अध्ययन से लाभ (Advantage of studying Home Lang

(i) घरेलू भाषा व्यक्ति सर्वांगीण व्यक्तित्व के विकास का साधन है।

(ii) इससे भावों, क्रियाओं, प्रतिक्रियाओं की सुन्दर, स्पष्ट और सरल रूप में अभिव्यंजना करने की कला आती है।

(iii) इससे बालक की मानसिक, संवेगात्मक और नैतिकता का विकास होता

(iv) घरेलू भाषा के द्वारा मस्तिष्क की शक्तियाँ अनुशासित हो जाती हैं, जि बालक में उचित निर्णय, तर्क, विवेक तथा धारणा की गति में तीव्रता आ जाती

v) इस भाषा के द्वारा उच्चकोटि के साहित्यिक भाव, काव्यानुभूति एवं रसानुभूति चमत्कार आदि के समझने में दक्षता आ जाती है।

घर की भाषा के प्रति अरुचि का कारण (Reason of no Interest in Home Lang

प्रत्येक देश की भाषा ही वहाँ की राजभाषा हुआ करती है। हमारी सभ्यता, संस्कृति एवं साहित्य पर छात्रों द्वारा कुठाराघात होता रहा है। जिसका कारण यह है कि साधार व्यक्ति आत्मरक्षा एवं उदर पालन के लिए शासक की गति विधियों तथा नि के अनुसार ही चला करते हैं तथा अपना उल्लू सीधा करने के लिए अपने आदर्शों को ठुकराकर दूसरों की चाटुकारिता में लगे रहते हैं। समय के परिवर्तन के साथ मा की शिक्षा, सभ्यता तथा संस्कृति भी बदलती गयी। मातृभाषा की उपयोगिता नष्ट हो गयी। अपनी मातृभाषा को उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाने लगा। मातृभाषा में अरुचि का कारण आज के भौतिक युग में सफलता प्राप्त करने के लिए हिन्दी में कु विषयों में अच्छी पुस्तकों का अभाव [illegible] है जिससे अन्य भाषाओं का मुँह ताक पड़ता है। अतः भारतीय छात्रों के लिए हिन्दी भाषा का उतना महत्त्व नहीं रह जाता

Scanned with CamScanner

शिक्षा का माध्यम घर की भाषा (Education Medium Home Language) → शिक्षाशास्त्रियों के मतानुसार बालक की मातृभाषा अथवा घरेलू भाषा के माध्यम से ही शिक्षा प्रदान की जाये। इसके प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं :-

(i) सांस्कृतिक कारण (Culture Causes) – प्रत्येक बालक एक विशेष सांस्कृतिक वातावरण में उत्पन्न होता है। घर की भाषा उस वातावरण का एक महत्वपूर्ण भाग तथा अभिव्यक्ति का साधन है। घरेलू भाषा के द्वारा ही बालक इस सांस्कृतिक वातावरण को ग्रहण करता है। किसी विदेशी भाषा का संबंध ऐसी संस्कृति से है जो उसकी संस्कृति से मिलती-जुलती है। उदाहरणस्वरूप अंग्रेज बच्चों के लिए फ्रेंच संस्कृति किंतु भारतीय बच्चों के लिए उस नई भाषा को सीखने में कठिनाई का अनुभव होता है। अतः बालक का संबंध न केवल नई भाषा से होगा बल्कि उसके नए विचारों से भी संपर्क हो सकता है।

(ii) शैक्षणिक कारण (Educational Causes) → शैक्षणिक आधार पर घरेलू शिक्षा का माध्यम बनाने से घर एवं विद्यालय के मध्य जो अंतर दिखाई देता है वह नहीं रहेगा। जब बालक घर से विद्यालय जाने लगता है तो उसे एक बिल्कुल नवीन वातावरण मिलता है, जो घर के वातावरण से बिल्कुल भिन्न होता है। विद्यालय के वातावरण में बालक को विभिन्न विचारों को ग्रहण करना पड़ता है जो घर के वातावरण से भिन्न होता है। अतः घर की वातावरण की अपेक्षा विद्यालय में वह अच्छी प्रगति कर सकता है।

विद्यालय की भाषा (School Language)

बालक विद्यालय में जिस भाषा में शिक्षा ग्रहण करता है वह विद्यालय की भाषा कही जाती है। विद्यालय में बालक को घर से बिल्कुल भिन्न वातावरण मिलता है। वहाँ उससे यह आशा की जाती है कि वह चुपचाप शांत होकर बैठा रहे। उसे जैसा कहा जाए वैसा ही करे। जो प्रश्न उससे पूछे जाएँ, उन्हीं का वह उत्तर दे। उसके सामने नए-नए विचार तथा नई-नई बातें आती हैं और उसे इसका प्रमाण देना होता है कि उसने उन नए विचारों को तथा नई बातों को जल्दी से जल्दी ग्रहण कर लिया है। यहाँ प्रत्येक बात बालक को घर से भिन्न मिलती है। कभी-कभी अध्यापक यह देखते हैं कि बहुत से बालक →

Scanned with CamScanner

अपने आप को इस नवीन वातावरण के अनुकूल वातावरण के अनुकूल बनाने में असमर्थ पाते हैं तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है। यदि कुछ नई बात बालक के सामने रखी जाती है जो कि उसकी मातृभाषा से भिन्न होती है तो बालक की कठिनाईयाँ संभवत: बढ़ जाती हैं जिसका अनुमान स्वयं भलीभाँति लगाया जा सकता है। यदि बालक को पाठशाला में आते हुए बहुत समय हो भी जाए, फिर भी उसे भिन्न-भिन्न विषयों में ढेर सारे पाठ पढ़ने होंगे। वह भूगोल अथवा इतिहास पाठ सरलता से समझ सकेगा, यदि वह उसकी घरेलू भाषा में पढ़ाया जाएगा। दूसरी भाषा के माध्यम से इन विषयों को पढ़ाने में बालक पर भार बढ़ जायेगा और उसकी प्रगति अत्यन्त होगी।

जिस भाषा का प्रयोग बालक अपने घर में करता है, उसमें शिक्षा देने से घर और पाठशाला का सम्बन्ध निकटता का कारण बनाया जा सकता है। जो कुछ बालक पाठशाला में पढ़ेगा, उसका प्रयोग वह घर में कर सकता है। इसके अतिरिक्त माता-पिता भी समस्याओं को अच्छी प्रकार से समझ सकेंगे और बालक की शिक्षा में पाठशाला को कुछ योगदान दे सकेंगे। माता-पिता किसी भी प्रकरण को घरेलू भाषा में जितनी अच्छी तरह से अभिव्यक्त कर सकते हैं उतना अन्य भाषाओं में नहीं कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त बालक भी कोई भी प्रकरण जितनी अच्छी तरह से घरेलू भाषा में सीख लेता है उतना अन्य भाषाओं के प्रयोग में नहीं सीख पाता है।

घरेलू भाषा की अपेक्षा विद्यालयी भाषा के स्तर की शक्ति में गत्यात्मकता →
(The Power of Dynamics of the standard language as the school language Vs. Home Language →)

घरेलू भाषा की अपेक्षा विद्यालय में प्रयोग की जानेवाली भाषा के स्तर की शक्ति अधिक आँकी जाती है। इसका प्रमुख कारण यही है कि विभिन्न विषयों का पठन-पाठन कार्य छात्र विद्यालयी भाषा में करता है और उस भाषा का निरन्तर उपयोग करने से उस भाषा पर पकड़ उत्पन्न हो जाती है। बालक विद्यालयी भाषा में ही वाचन करता है तथा मौखिक अभिव्यक्ति के लिए विद्यालयी भाषा का ही प्रयोग किया जाता है।

Scanned with CamScanner

Pg-6 → BCC-4/UNIT-2 → CL-1/B.ED-2019-21/Dt.-22/06/20.

→ H.W. → (सभी से) →

(By Rakesh Sir)

① (Long Type) → घर की भाषा ही शिक्षा का माध्यम क्यों होनी चाहिए? इसके प्रमुख कारण बताइए।

② (Short Type) →

〈क〉 'शिक्षा का माध्यम विद्यालयी भाषा' इस प्रकरण पर टिप्पणी लिखिए।

〈ख〉 "घरेलू भाषा की अपेक्षा विद्यालयी भाषा के स्तर में जटिलता अधिक होती है।" इस कथन की पुष्टि कीजिए।

③ Short Notes :→ (Self to do)

〈i〉 निरन्तरता एवं गैर निरन्तरता का सिद्धान्त (Theory of Continuity and Discontinuity)

〈ii〉 न्यूनता या कमी का सिद्धान्त (ऐटर, 1989) (Deficit Theory: Eter, 1989)

Scanned with CamScanner